1950C Concerning Death

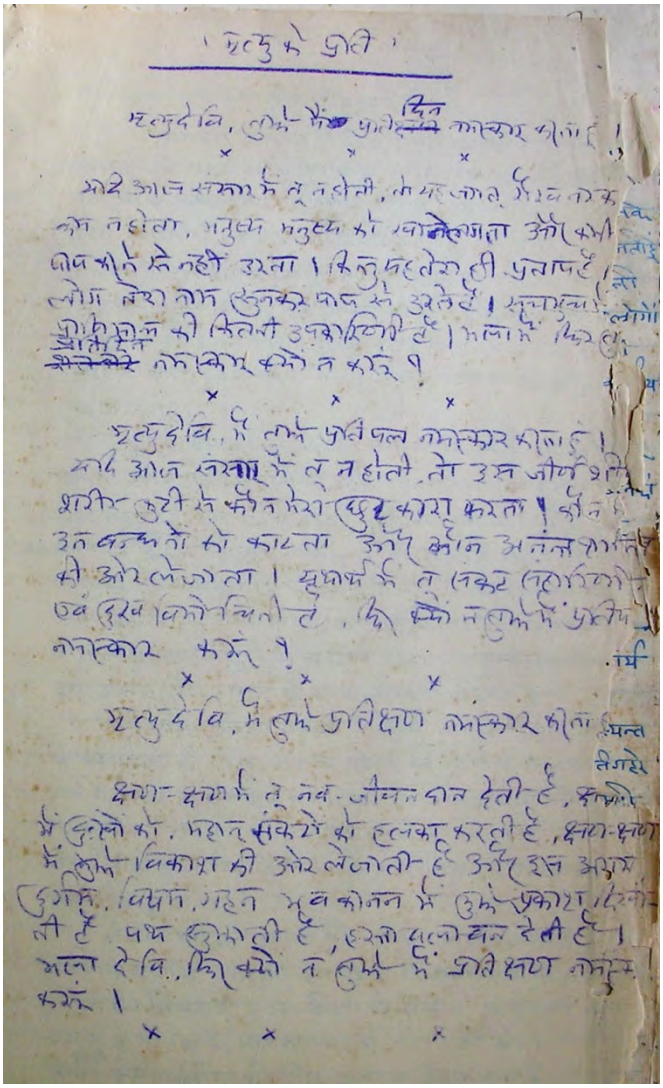

'मृत्यु के प्रति'

मृत्युदेवि, तुम्हें मैं प्रतिदिन नमस्कार करता हूँ !

× × ×

यदि आज संसार में तू न होती, तो यह जगत् रौरव नरक क्यों न होता, मनुष्य मनुष्य को खा जाता और कभी पाप करने से नहीं डरता। किन्तु यह तेरा ही प्रताप है, लोग तेरा नाम सुनकर पाप से डरते हैं। सचमुच प्राणिमात्र की कितनी उपकारिणी है। भला मैं फिर तुम्हें ~~प्रतिदिन~~ नमस्कार क्यों न करूँ ?

× × ×

मृत्युदेवि, मैं तुम्हें प्रतिपल नमस्कार करता हूँ ! यदि आज संसार में तू न होती, तो उस जीर्ण शीर्ण शरीर कुटी से कौन मेरा छुटकारा करता ! कौन उन बन्धनों को काटता और कौन अनन्त शान्ति की ओर ले जाता। सचमुच में तू निकट निर्धनों एवं दुखियों की संगिनी है, फिर क्यों न तुम्हें मैं प्रतिपल नमस्कार करूँ ?

× × ×

मृत्युदेवि, मैं तुम्हें प्रतिक्षण नमस्कार करता हूँ।

क्षण-क्षण में तू नव-जीवन दान देती है, क्षण-क्षण में दुखियों को, महान संकटों को हलका करती है, क्षण-क्षण में तुम्हें विकास की ओर ले जाती है और इस प्रकार दुर्गम, विषम, गहन भव-कानन में तुम्हें प्रकाश दिखाती है, पथ सुझाती है, सच्चा पथ-प्रदर्शन देती है। भला देवि, फिर क्यों न तुम्हें मैं प्रतिक्षण नमस्कार करूँ।

× × ×